(शिवाजी)

⇒ मराठों के राजनीतिक उत्कर्ष तथा मराठा राज्य की स्थापना में शिवाजी का योगदान बहुमूल्य था। उन्होंने अपने पिता द्वारा आरम्भ किए गए मराठों को संगठित ~~करने के लिए~~ संगठित करने के कार्य को आगे बढ़ाया तथा दक्कनी एवं मुगलों से संघर्ष कर स्वतंत्र मराठा राज्य की स्थापना किया।

आरम्भिक जीवन :

माता → जीजाबाई

जन्मतिथि :- → 9 मार्च 1627
→ 20 फरवरी 1630
↓
वास्तविक - 9 मार्च 1627

पिता → शाहजी भोसले

जन्म → पूना के निकट शिवनेर के किला में।

विवाह → साईबाई (~~अल्पायु~~) निम्बालकर (12 वर्ष)

⇒ शाहजी ने शिवाजी की शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था आरम्भ से ही उच्च कोटि का कर दिया।

⇒ शिवाजी के आरम्भिक जीवन पर उनकी माता जीजीबाई और गुरु कोण्डदेव के व्यक्तित्व का अत्यधिक प्रभाव था।

रोचक जानकारी :- शाहजी जब तुकोबाई मोहिते से दूसरी शादी किया तो शायद उसके पहली पत्नी जीजाबाई अपने पुत्र को लेकर उससे अलग रहने लगी।

⇒ जीजाबाई धर्मपरायण स्त्री थी जीसका प्रभाव शिवाजी में देखने को मिला।

⇒ कोण्डदेव शिवाजी के शिक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया।

नोट :- गुरु रामदास का भी शिवाजी पर अच्छा प्रभाव पड़ा उनके उपदेशों से शिवाजी में राष्ट्र भावना और स्वाभिमान विकास हुआ।

⇒ कोण्डदेव ने शिवाजी को पढ़ने-लिखने के अलावे घुड़सवारी, तीरंदाजी युद्ध-कौशल तथा रणनीति में निपुण बना दिया। उन्हे सैन्य संगठन की अच्छी शिक्षा दी गई।

⇒ 1637 ई० में शाहजी भोसले ने अपने पुत्र शिवाजी तथा पत्नी जीजाबाई सहित पूना की अपनी पैतृक जागीर की देखभाल अपने विश्वासपात्र मित्र दादा जी कोण्डदेव को सौंपकर स्वयं बिजापुर राज्य में चले गए (कर्नाटक)

⇒ शिवाजी ने अपनी जागीर का प्रबंध करना शुरू कर दिया। वह इस व्यवस्था के साथ-साथ मालवा प्रदेश के नवयुवकों को संगठित कर उनमें देशप्रेम की भावना जगाई। उन्हे सैन्य शिक्षा प्रदान करने लगा।

रोचक बात - शिवाजी के दंबगई व्यवहार आस-पास के लोग क्षुब्ध थे। इस व्यवहार से दूर रखने का प्रयास उनके गुरु ने भी किया बीच में शाह जी ने भी उसे बीजापुर ले गया पर शिवाजी के व्यवहार से वह के सुल्तान क्रोधित हो गए उन्हे वापस पुना भेजा पड़ा।

⇒ शिवाजी द० भारत के तात्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों का लाभ उठाने की योजना बनाई क्योंकि इस समय अहमदनगर गोलकुण्डा तथा बीजापुर की स्थिति जर्जर होने को चला थी। मुगलों का भी दबाव बढ़ता जा रहा थी।

शिवाजी की आरम्भिक सफलताएँ:

⇒ शिवाजी ने सर्वप्रथम 1643 को बीजापुर के सिंहनगढ़ को मालवी योद्धाओं की सहायता से जीत लिया।

⇒ 1646 में वह तोरण पर अधिकार कर लिया।

Note:- 1647 में दादा कोण्डदेव की मृत्यु हो गई।

⇒ शिवा जी लुटमार की गतिविधियाँ कोण्डदेव के मृत्यु के बाद बीजापुर के साथ बढ़ा दिया परिणामत: 1648 ई० में शाहजी को बंदी बना लिया।

⇒ जब शिवाजी ने बीजापुर का दुर्ग वापस किया तब शाहजी भोसले को कारागाह से मुक्त (1649 ई०) कर दिया।

⇒ 1656 ई० तक शिवाजी चाकन, पुरन्दर, बारामती सूपा, तिकोना लोहगढ़ आदि क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया।

⇒ 1656 में शिवाजी की महत्वपूर्ण विजय जावली का किला था। यह किला एक मराठा सरदार चन्द्रराव मोरे के अधिकार में था।

⇒ Apl 1656 में रायगढ़ के किले को जीता जो बाद में उसे अपना राजधानी बनाया।

Note:- पुरन्दर का किला 1648 में नीलोजी निलकण्ठ से शिवाजी ने छीन लिया।

शिवाजी का मुगलों से संघर्ष

⇒ शिवाजी के स्वतंत्र राज्य की स्थापना में मुगल सबसे बड़ा रोड़ा था

⇒ 1657 में पहली बार शिवाजी का मुकाबला मुगलों से हुआ। अब वह बीजापुर के तरफ से मुगलों से लड़ रहा था।

⇒ जब औरंगजेब उत्तराधिकारी के युद्ध में व्यस्त था तो उसका लाभ शिवाजी ने उठाया।

⇒ शिवाजी पुनः बीजापुर क्षेत्र पर हमला करना शुरू कर दिया उन्होंने कोंकण तथा समुद्रतट के क्षेत्रों को अपने अधिकार में लेने लगा

⇒ 1658 में कल्याण एंव भिवण्डी को जीत लिया। अतः शिवाजी की शक्ति को दबाने के लिए 1659 में बीजापुर के शासक अपने योग्य सरदार अफजल खाँ के नेतृत्व में एक सैनिक टुकड़ी भेजी।

⇒ ब्राह्मण दूत कृष्ण जी भास्कर ने अफजल खाँ के वास्तविक उद्देश्य शिवाजी को बताया।

⇒ अफजल खाँ और शिवाजी का मुलाकात प्रतापगढ़ के दक्षिण में

स्थित पारनामक स्थान पर 2 Nov 1659 को हुई वहीं पर शिवाजी ने उसकी हत्या कर दिया।

⇒ शिवाजी की बढ़ती शक्ति से औरंगजेब भी भयभीत हो उठा उन्होंने 1660 में द० भारत का सुबेदार शाइस्ता खाँ को नियुक्त किया और शिवाजी को समाप्त करने का आदेश दिया।

⇒ शाइस्ता खाँ ने बीजापुर शासक को अपने पक्ष में कर पूना पर अधिकार जमा लिया।

⇒ चाकन और कल्याण से भी शिवाजी को हाथ धोना पड़ा।

⇒ दिनों दिन शिवाजी की पराजय से उसके सेना की मनोबल घटता जा रहा था अतः शिवाजी ने नया कदम उठाया

⇒ उन्होंने 15 Apr 1663 को रात्रि में चुपके से पूना के किले में प्रवेश किया और शाइस्ता खाँ पर आक्रमण किया शाइस्ता खाँ अपना जान बचाकर भागने में सफल हो गया। तथा उसके पुत्र एवं सेनानायक मारा गया।

⇒ शाइस्ता खाँ से क्रोध होकर औरंगजेब ने उसे तबादला कर बंगाल भेज दिया।

⇒ 1664 ई० में शिवाजी ने सूरत पर अधिकार कर लिया।

पुरन्दर की संधि - 1665

→ शिवाजी + राजा जयसिंह

⇒ 1665 में शिवाजी पर अंकुश लगाने के लिए औरंगजेब ने द० भारत का सुबेदार जयसिंह को नियुक्तकर शहजादा मुअज्जम और जयसिंह को द० भारत भेजा।

⇒ जयसिंह ने चालाकी से काम लिया। वह सिधा शिवाजी से युद्ध करने के बजाय बीजापुर के सुल्तान को अपने पक्ष में किया।

Note:- जयसिंह को मिर्जा की उपाधि प्रदान किया गया था वह तुर्की, फारसी उर्दू तथा राजस्थानी भाषा का अच्छा जान था।

⇒ शिवाजी के विरोधियों को अपने पक्ष में करके जयसिंह ने पुरन्दर के किले को घेर लिया। और आस-पास के क्षेत्र को लुट कर किले पर दबाव डाला। और आत्मसमर्पण करने के लिए विवश कर दिया।

= 22 June 1665 को दोनों के बीच संधि हुई उसे ही पुरन्दर की संधि कहते हैं।

संधि के प्रमुख शर्तें :

- शिवाजी को 23 किले और 4 लाख हुण की वार्षिक आय की भुमि मुगलों को देना पड़ा। 1 हुण = 3.5 ₹
- रायगढ़ को सम्मिलित कर शिवाजी के पास 12 किले बचे। और 1 लाख हुण वाली वार्षिक भुमि।
- वह मुगल अधिपत्य को स्वीकार किया और अपने स्थान पर पुत्र शाम्भाजी को 5000 घुड़सवारों के साथ मुगल सेवा में भेजना स्वीकार किया।
- शिवाजी ने बीजापुर के विरुद्ध मुगलों को सैनिक सहायता देने को स्वीकार किया।

⇒ शिवाजी मुगल सेना के साथ बालाघाट (बीजापुर) पर आक्रमण किया लेकिन वह असफल हो गया।

⇒ इस दौरान जयसिंह ने शिवाजी को कहा कि मुगल दरबार में जाकर औरंगजेब से मिलकर सहायता पाने की कोशिश करें।

⇒ शिवाजी अपने पुत्र शाम्भाजी सहित 1666 में 4000 मराठा सैनिकों को लेकर आगरा पहुँचा।

⇒ जब वह दरबार पहुँचा तो उसे 5000 मनसबदारों की श्रेणी में बैठा दिया। जिससे शिवाजी क्रोधित हुए और अपनी गहरी प्रतिक्रिया जताई।

⇒ इस दौरान उन्हें तुरन्त नजरबंद कर लिया जिससे शिवाजी औरंगजेब का इरादा समझ गया और वह पहरेदारों को

धोखा देने में सफल हुआ अपने पुत्र के साथ भाग निकला।

नोट:- शिवाजी को औरंगजेब गिरफ्तार कर जयपुर भवन में रखा था। और उसका देखभाल जयसिंह के पुत्र राम सिंह कर रहा था

⇒ रोचक जानकारी

शिवाजी अपने सौतेला भाई हीरोजी को अपना सोने का कड़ा पहनाकर उन्हे अपना बिस्तर पर लिटाकर अपने पुत्र शाम्भाजी के साथ मिठाई के टोकरे में बैठकर भाग निकले।

⇒ 1670 में पुनः सूरत को लुटा। इसी बीच दक्षिण भारत में मुअज्जम और दिलेर खाँ आपसी मनमुटाव हो गया उसका लाभ शिवाजी ने उठाया।

⇒ शिवाजी ने मुगलों से अनेक किले वापस छीन लिए।

ध्यान रखें: जब वह मुगल दरबार से भाग निकला था तो कुछ वर्षों तक शांत रहा इसी बिच औरंगजेब ने शिवाजी को बरार का जागीर देकर उन्हे राजा स्वीकार किया और शाम्भा जी को 5000 मनसब प्रदान किया।

शिवाजी की यह संधि कुटनीति का चाल था।

⇒ शिवाजी 1672 में सूरत से चौथ कर वसूलना शुरु कर दिया

⇒ 1670-74 के बीच पुरन्दर, पन्हाला, सतारा एवं अनेक दुर्गों को वापस ले लिया।

* उसी समय औरंगजेब पश्चिमोत्तर सीमा में व्यस्त था जिसके चलते कोई कठोर कदम न उठा सका।

⇒ 1672 में सालहेर की लड़ाई हुई जिसमें शिवाजी विजय रहा।
↳ शिवाजी + (दिलेर खाँ & बहादुर खाँ)

छत्रपति के रूप में शिवाजी
(1674 – 80)

⇒ 1674 ई० तक लगभग सम्पूर्ण महाराष्ट्र ~~उनके~~ (शिवाजी) के अधिकार में आ चुका था।

⇒ 16 June 1674 में शिवाजी ने रायगढ़ के दुर्ग में बड़ी धूम-धाम से अपना राज्याभिषेक करवाया। और 'छत्रपति' की उपाधि धारण किया।

⇒ शिवाजी ने अपना राज्याभिषेक सम्पूर्ण वैदिक विधि-विधान के अनुकूल काशी के प्रसिद्ध ~~विद्व~~ विद्वान विश्वेश्वर उर्फ गंगाभट्ट से करवाया।

⇒ कुछ दिन बाद शिवाजी के माता जीजाबाई की मृत्यु हो गई जिसके चलते उसे अशुभ मानकर Sep 1674 में पुनः निश्चलपुरी गोसावी से (तांत्रिक) तांत्रिक विधि से अपना राज्याभिषेक करवाया।

राज्याभिषेक के दो फायदा →

- द० राज्यों के साथ बराबर स्तर पर समझौता कर सकता था
- मराठा सरदारों में सबसे प्रतिष्ठित और मराठा सरदार उसके बराबर की दावा नहीं कर सकते थे।

Note :- शिवाजी शिर्के, मोरे, निम्बालकर घरानों से वैवाहिक संबंध स्थापित किया।

उनका एक अन्य उपाधि → हैंदवधर्मोद्धारक

⇒ शिवाजी ने बहादुरखां के शिविर पर आक्रमण कर पेडगाँव में स्थित मुगल खजाने को लूट लिया। जिससे उनकी आर्थिक समस्या दूर हो गई।

⇒ उन्होंने खानदेश, बंगलाना, कोल्हापुर इत्यादि इलाकों पर आक्रमण किया।

⇒ उन्होंने बीजापुर के विरुद्ध गोलकुण्डा से संधि कर लिया।

और कर्नाटक क्षेत्र को आपस में बांट लेने का फैसला किया। कुतुबशाह ने शिवाजी को 1 लाख हुण प्रतिवर्ष देने का वादा किया

⇒ शिवाजी ने जिंजि और वेलोर को जीत लिया। संधि के अनुसार जब गोलकुण्डा को कोई हिस्सा नहीं दिया

⇒ 1677 में शिवाजी का अंतिम महत्वपूर्ण अभियान कर्नाटक का अभियान था।

⇒ उन्होंने गोलकुण्डा के दो ब्राह्मण मंत्री मदन्ना और अखन्ना के माध्यम से गुप्त संधि गोलकुण्डा के शासक के साथ किया था।

⇒ कर्नाटक अभियान से वापस लौटने के कुछ समय बाद 14 APL 1680 को शिवाजी की मृत्यु हो गई।